पाठ 14. खूँटा पंडित

पाठ की भूमिका

यह पाठ उन लोगों पर व्यंग्य करता है जिनका बड़बोलापन कभी-कभी हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न कर देता है। खूँटा पंडित के नाम से प्रसिद्ध बजरंगी के साथ भी कुछ-कुछ ऐसा ही हुआ था। इस पाठ के माध्यम से बच्चे जीवन की समस्याओं से सकारात्मक रूप से निपटने में सक्षम हो सकेंगे।

पाठ का सार

रामपुरा गाँव के लोग बजरंगी से परेशान रहते थे क्योंकि वह अकारण ही मवेशियों, आदि को बाँधने के प्रयोजन से गाड़े गए खूँटों को चुपचाप उखाड़ देता था। गाँव के बच्चों ने उसे सबक सिखाने की ठान ली। उन्होंने बजरंगी को एक ऐसा ठूँठ उखाड़ने के लिए ललकारा जिसकी जड़ें बहुत गहरी थीं। इस काम में बजरंगी की किरकिरी हुई। परिणाम यह हुआ कि खूँटा उखाड़ने की उसकी आदत ही छूट गई।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस कहानी में ग्रामीण परिवेश का वर्णन है। खूँटा पंडित का चरित्र रोचक है। हास्य का पुट देते हुए इस कहानी का वाचन अंशों में बाँटकर करें और उनके सरलार्थ समझाते जाएँ। कुछ अंशों का वाचन बच्चों से भी करवाया जा सकता है। कहानी के संदेश के रूप में यह बतलाया जा सकता है कि किसी चीज़ की लत व उसे पूरा करने की ज़िद बुरी होती है।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 10** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - उदाहरण देकर स्त्रीलिंग व पुल्लिंग शब्दों की पहचान कराएँ। लिंग की परिभाषा देने से बचें।
  - यह सुनिश्चित करें कि बच्चे छोटे-छोटे वाक्य बनाएँ। गलतियाँ होने पर उनका निराकरण करें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - अच्छी लतों और बुरी लतों की सूची बनवाई जा सकती है। उन लतों से होने वाले लाभ या हानि की चर्चा की जा सकती है।